



भारत के आर्थिक उन्नयन में युवाशक्ति का योगदान: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन (मिथिलांचल के विशेष संदर्भ में)

डॉ० सुभाष कुमार सुमन

सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग, मारवाड़ी महाविद्यालय, ल० ना० मि० वि०, दरभंगा, बिहार।

ABSTRACT

किसी देश के आर्थिक उन्नयन में युवा भावित की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। क्योंकि किसी देश की आर्थिक, सांस्कृतिक प्रगति दक्ष युवा भावित के योगदान पर निर्भर करता है। सौभाग्य की बात है कि हमारा देश भारत विश्व में युवा भावित के मामले में सबसे धनी है। विडंबना है कि युवाओं का बड़ा भाग बेरोजगारी का दंड झेल रहा है जो किसी भी स्थिति में उचित प्रतीत नहीं होता है। परिणामस्वरूप देश अपने विकास पथ पर अपेक्षित गति नहीं पकड़ पा रहा है। दूसरी ओर बहुत से युवा राह से भटक रहे हैं। इस आलेख में युवाओं के इन्ही समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करते हुए अध्ययन का प्रयास किया गया है। जिससे कि भटके हुए युवाओं को सही मार्ग पर लाने एवं देश के प्रगति में सहयोगी बनाने हेतु समुचित सुझाव देने का प्रयास किया जायेगा।

भूमिका:

युवा शक्ति किसी देश के आर्थिक, सांस्कृतिक प्रगति का महत्वपूर्ण स्तंभ होता है। युवा शक्ति का सही उपयोग कर कोई देश अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। आवश्यकता है कि इस शक्ति का सही ढंग से उपयोग किया जाय। कारण युवा शक्ति का सही उपयोग नहीं होने पर विकास का मार्ग तो अवरुद्ध होता ही है। साथ ही विभिन्न सामाजिक कुरीतियों का कारण भी बनता है। जिस देश के पास उसकी आबादी का बड़ा भाग युवाओं का है तो वह प्रगति पथ पर तीव्र गति से चल सकता है। दूसरी ओर बच्चों और बुद्धजनों की आबादी अधिक होने पर प्रगति की गति धीमी होती है। हमारा देश भारत विश्व में सबसे अधिक आबादी वाला देश बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र जन-संख्या कोश के 2023 के डाटा अनुसार भारत की आबादी 142 करोड़ 86 लाख है। सौभाग्य की बात है कि हमारा देश युवा शक्ति के मामलों में धनी है 15 से 64 वर्ष के आयु वर्ग की आबादी कुल आबादी का 68 प्रतिशत है। जिसमें 15 से 24 वर्ष के युवाओं की आबादी 25 करोड़ 40 लाख है।

आवश्यकता है कि इतनी बड़ी कार्यशील आबादी तथा बड़ी युवा आबादी का सही ढंग से उपयोग किया जाय तो हमारे देश के बहुमुखी विकास की गति को तीव्र किया जा सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि रोजगार के अवसर उत्पन्न कर बेरोजगारी को दूर करना तथा अकुशल कामगारों तथा श्रमिकों को दक्ष बनाना। खुशी की बात है कि वर्तमान केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार इस दिशा में कारगर कदम बढ़ा चुकी है। इसके लिए देश में नई शिक्षा नीति, रोजगार परक शिक्षा को लागू करना, कौशल विकास कार्यक्रम लागू कर युवा शक्ति को शिक्षित एवं कुशल बनाने का अभियान जारी। दूसरी तरफ विभिन्न आर्थिक उद्यमों हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराकर सरकार महत्वपूर्ण कदम बढ़ा चुकी है।

शोध समस्या:

वास्तव में युवा शक्ति के मामले में हमारा देश विश्व में सबसे धनी है। फिर भी विकास की जो रफ्तार होनी चाहिए वह देखने को नहीं मिलती है। इसके पिछे युवा शक्ति का पूर्ण उपयोग नहीं होना मुख्य कारण है। अतः इसके कारणों की खोज के लिए कुछ मुख्य समस्याओं पर अध्ययन किया गया है जो निम्नवत हैं:

विधि तंत्र:

वर्तमान शोध आलेख शोधकर्ता द्वारा किए गए स्वयं के अध्ययन पर आधारित है। इस अध्ययन हेतु गाँव, समाज में मार्ग से भटके हुए युवाओं, बेरोजगार युवाओं, अशिक्षित एवं कम पढ़े लिखे युवाओं एवं उनके परिवार जनों से बातचीत कर समस्या की गहराई में जाने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ आंकड़े एवं संदर्भ इन्टरनेट एवं पत्र पत्रिकाओं से लिए गए हैं।

विश्लेषण:

शोधकर्ता ने अपने गाँव और पंचायत में कुछ भटके हुए बेरोजगार युवकों को देखकर उसके भटकाव के कारण जानने का प्रयास किया है। इसके लिए शोधकर्ता ने अपने पंचायत के अलावे भी कुछ गाँव के बेरोजगार युवकों से मनोवैज्ञानिक तरीके से बातचीतकर कारणों को समझने का प्रयास किया है। पुनः ऐसे युवाओं के माता पिता अथवा घर के वरिष्ठ सदस्य से कारण जानने की कोशिश की है। इस अध्ययन में पाया गया की सारी समस्याओं के जड़ में मूल समस्या उन युवाओं की बेरोजगारी है। इसमें अधिकांश युवक अर्थाभाव के कारण स्वयं के रोजगार करने में सक्षम नहीं हैं और नौकरी की तलाश में असफल होने पर कुंठा के शिकार हो गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ युवक के गार्जियन सम्पन्न हैं जो अपने बेरोजगार युवकों को स्वयं के रोजगार में तो लगाना चाहते हैं परंतु इसमें कम ही युवा अपना रोजगार करते हैं। अधिकांश युवा नौकरी की तलाश में भटकते हैं तथा गार्जियन से प्राप्त आय का विभिन्न व्यवसनों में दुरुपयोग करते हैं। ये सारी समस्याएँ वास्तव में कुंठा के शिकार युवाओं की मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हैं। इससे उत्पन्न विभिन्न समस्याओं में कुछ प्रमुख निम्न प्रकार हैं:

• नशापान का शिकार:

नशापान किसी भी समाज या देश में मनुष्य के विनाश का कारण बनता है। नशा का सेवन व्यक्ति कुछ तो सत्संग के कारण पकड़ता और अधिकतर व्यक्ति बेरोजगारी, अर्थाभाव, जीवन में असफलता के कारण कुंठित होकर नशा का सेवन शुरू कर देते हैं। खासकर युवा शक्ति का नशा का आदी होना किसी देश के आर्थिक प्रगति का बाधक तो होता ही है साथ ही विभिन्न प्रकार के अन्य समस्याओं जैसे गंभीर बिमारियाँ पारिवारिक और सामाजिक अशांति का कारण बनता है।

नशा के लिए विभिन्न प्रकार के सामग्री जैसे— दारु, भाराब, धूम्रपान, तम्बाकू, गुटका आदि उपयोग किये जाते हैं। जिसमें निकोटिन जैसे घातक पदार्थ पाये जाते हैं। जो मनुष्य को मानसिक तौर पर शुरुस्त और कुंठित बनाते ही हैं, साथ ही कैंसर टी०बी० जैसे घातक रोगों का मूल भी है। इसके अतिरिक्त नशेड़ी व्यक्ति अर्थाभाव होने पर घर के बहुमुल्य सामान जमीन जायदाद को बेच डालते हैं, साथ ही चोरी, डकैती राहजनी आदि दृष्टकर्मों में संलग्न हो जाते हैं। इस प्रकार नशा का सेवन किसी देश या समाज के आर्थिक प्रगति का बहुत बड़ा बाधक है और सामाजिक अशांति का कारण भी।

• क्रोध:

चाणक्य नीति के अनुसार "क्रोध ईसान का सबसे बड़ा शत्रु है। यह व्यक्ति के बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है जिससे सोचने समझने की शक्ति नष्ट हो जाती है और निर्णय की क्षमता खत्म हो जाती है" कहा भी गया है कि "जब क्रोध मनुष्य पर छाता है तो बुद्धि विवेक मर जाता है।"

वास्तव में क्रोध मनुष्य की एक ऐसी बुरी प्रवृत्ति है जो मनुष्य के मस्तिष्क को किसी भी बात पर तत्क्षण उद्बलित कर देता है। ऐसे मनुष्य, जब कभी उसकी इच्छा अनुसार कोई काम नहीं हो पाता है अथवा खुद से भी कोई काम में गड़बड़ी हो जाता है, तो वह तुरंत क्रोधित हो जाता है। ऐसी स्थिति में वह सामने वाले व्यक्ति से लड़ाई झगड़ा तो करता है साथ ही सामानों का तोड़फोड़ भी करने लगता है। परिणामस्वरूप उस समय उसके निर्णय लेने की क्षमता कुंठित हो जाती है और वह गलती पर गलती करता चला जाता है यह स्थिति एक प्रकार विकृत मानसिक प्रवृत्ति का परिचायक है। अतः ऐसे मनुष्य को क्रोध से बचना चाहिए। इसके लिए जब कोई क्रोध उत्पन्न होने की स्थिति बने तो मनुष्य को शांत चित होकर चुप-चाप कुछ देर बैठ जाना चाहिए। यदि ऐसा करने में वो सक्षम नहीं होते हैं तो मनोचिकित्सक से सलाह-मशवरा करना चाहिए। अन्यथा यह क्रोध मनुष्य के उच्च रक्तचाप, मानसिक विकृतता, हृदयाघात जैसे बीमारियों का शिकार बना देता है। कभी-कभी मनुष्य अत्यधिक क्रोध होने पर मारपीट तो करता ही है, हत्या जैसे अपराध भी कर डालता है। अतः स्पष्ट है। क्रोध मनुष्य को विनाश की ओर ही ले जाता है।

• वासना का शिकार:

आचार्य चाणक्य के अनुसार—“वासना प्रगति में बाधक ही नहीं मनुष्य के जीवन को बर्बाद करने की क्षमता रखता है यह मनुष्य के जीवन पर नकारात्मक असर डालती है तथा इससे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य भी खराब हो जाता है।”

काम वासना किसी भी मनुष्य के जीवन में एक उम्र के बाद आवश्यक प्राकृतिक प्रवृत्ति है जो जीव जगत के संचालन का मार्ग है परंतु जब यही वासना किसी मनुष्य पर नशा के रूप में छा जाता है तो वह मनुष्य अपनी वासना पूर्ति के लिए गलत मार्ग अपनाने लगता है यह स्थिति मनुष्य के मनोविचार से उत्पन्न होती है जिसे मनोवैज्ञानिक दुर्बलता भी कहते हैं। बाद में चलकर यह प्रवृत्ति मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार की दुश्चारात्मिक भावनाएँ उत्पन्न कर देती है जिससे वह अपराधि प्रवृत्ति का हो जाता है। ऐसे मनुष्य अपनी इच्छा पूर्ति के लिए अपनी संपत्ति का विनाश तो करता ही है साथ ही उसके विकास का मार्ग भी अवरुद्ध हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति अपराधिक प्रवृत्ति के बन जाते हैं और बलात्कार, हत्या, ब्लेकमेलिंग जैसे अपराधों में लुप्त हो जाते हैं। यह प्रवृत्ति अन्ततः मनुष्य के स्वयं के सर्वनाश के कारक साबित होते हैं। अतः मनुष्य को ऐसी प्रवृत्ति और आचरण से बचना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को संयमित जीवन बिताते हुए अपने सही उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आगे बढ़ते रहना चाहिए। फिर भी यदि उसके दिमाग में इस प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं तो उसे मनोचिकित्सक से सलाह लेना चाहिए।

• लापरवाही:

लापरवाही मनुष्य का एक अव्यवहारिक प्रवृत्ति है जो बचपन से ही उसमें उत्पन्न होने लगता है और युवावस्था आते-आते घमण्ड के रूप में परिवर्तित हो जाता है। ऐसे मनुष्य न तो समय के महत्व को समझते हैं न ही किसी कार्य के महत्व को। परिणाम स्वरूप ऐसे व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन हो जाते हैं और किसी काम को महत्व नहीं देते हुए टालते रहते हैं। इस प्रकार जीवन में आए हुए अवसरों को गवा बैठते हैं और जीवन में असफलता ही असफलता प्राप्त करते हैं। अन्ततः ऐसे लोग असफल जीवन व्यतीत करते हैं। इस प्रकार की स्थिति मुख्य रूप से पारिवारिक कारणों से उत्पन्न होती है क्योंकि जब कोई माता-पिता अपने बच्चे को उम्र के साथ-साथ पढ़ाई के साथ छोटे मोटे घरेलू कार्य के तरफ प्रेरित नहीं करते हैं और प्यार में हर वक्त सिर्फ छूट देते रहते हैं तो ऐसे बच्चों में यह प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।

• लालच:

लालच अधिक होना मनुष्य के अनेक अनौतिक कार्यों का कारण है वास्तव में लालच मनुष्य की एक मनोवैज्ञानिक दुश्प्रवृत्ति है जिसके वी भूत वह कम से कम समय में किसी भी तरीके से अधिक से अधिक धन संग्रह एवं सुख सुविधा प्राप्त करना चाहता है। वास्तव में यह प्रवृत्ति मानव के आत्म संतुष्टि के अभाव के कारण होता है। इसी का परिणाम समाज में घूसखोरी ठगी, चोरी चमारी जैसे दुराचार पनपते हैं। यही कारण है कि आज समाज में छोटे स्तर से बड़े स्तर तक घूसखोरी, दुकानदारों द्वारा मिलावट या अन्य गलत कार्य साइबर ठगी, समाज में गहरे स्थान बना चूके हैं। ऐसे व्यक्तियों को सिर्फ कानून द्वारा दंडित कर सुधारना संभव नहीं है। आवश्यकता है कि ऐसे व्यक्तियों को मनोवैज्ञानिक तरीके से उनके विचार को परिवर्तित कर सही मार्ग पर लाने का

प्रयास किया जाय।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि बेरोजगारी युवाओं में व्याप्त अनेक समस्याओं का मूल है। बेरोजगारी के कारण कुंठा के शिकार लोग राह से भटक जाते हैं और उपरोक्त व्यक्तियों में लुप्त होकर अपना तो विनाश करते ही हैं तथा परिवार एवं समाज में विभिन्न प्रकार की समस्या उत्पन्न कर अशांति फैलाते हैं। दूसरी तरफ शैक्षणिक दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षित युवाओं में भी एक बड़ा वर्ग येन केन प्रकारेण ऊँची डिग्रियाँ तो प्राप्त कर लिय हैं परन्तु बौद्धिक दृष्टि से अशिक्षित ही हैं। ऐसे युवाओं में भटकाव अधिक देखने को मिलता है। ऐसे युवा सही योग्यता के अभाव में अवसर का लाभ नहीं उठा पाते साथ ही कृषि कार्य में योगदान देना निम्न समझते हैं। इसके अतिरिक्त आवादी के अनुपात में रोजगार के अवसर का अभाव भी एक बड़ी समस्या है।

सुझाव:

देश की अर्थव्यवस्था में तीव्र गति प्रदान करने हेतु तथा युवाओं में भटकाव पर नियंत्रण के लिए रोजगार के अवसर में वृद्धि आवश्यक है। इसलिए निम्न सुझाव महत्वपूर्ण हैं:

- पुरानी आर्थिक गतिविधियों में विस्तार करना तथा नये-नये गतिविधियाँ अपनाकर रोजगार के अवसर बढ़ाना।
- युवाओं को स्वयं के रोजगार हेतु पशिक्षण देना पूँजी उपलब्ध कराना।
- युवाओं को स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित कराना।
- भटके हुए युवाओं को समुचित चिकित्सा उपलब्ध कराना।
- युवाओं को मनोवैज्ञानिक समस्याओं से निजात के लिए मनोवैज्ञानिक विशेषज्ञों से सम्पर्क कराकर मनोवैज्ञानिक तरीके से सुधार का प्रयास करना।

उपरोक्त उपाय कर युवाओं को देश की आर्थिक गतिविधि में लगाकर उस शक्ति का समुचित उपयोग किया जा सकता है जिससे हमारा देश विकास के विभिन्न मानकों पर तीव्रता से आगे बढ़ेगा।

अन्त में कहना है कि हमारी वर्तमान केन्द्र सरकार इस दिशा में अनेक ठोस कदम बढ़ा चुकी है जिसके अच्छे परिणाम भी आ रहे हैं। परन्तु अभी और भी तीव्र गति से प्रयास जारी रखना पड़ेगा तभी युवा शक्ति का सही उपयोग संभव हो सकेगा।

संदर्भ सूची:

1. Google.com, www. zeesiz.com: "142 करोड़ 86 लाख..... दुनिया की सबसे आबादी वाला देश बन गया भारत"
2. Google.com, <https://webdunia.com/religious-article/chanakya-niti-k-anuser-kaisha-hona-chahiye-yuva-12211070....> "चाणक्य के अनुसार देश के युवाओं में होना चाहिए 10 खूबियाँ"
3. स्वयं के अध्ययन पर आधारित (विभिन्न समस्याएँ एवं कारण)